(03), (05) काव्य - हेतु (काव्य - कारण)

PAGE NO.:
DATE: / /200

Ques: काव्य - हेतु किसे कहते हैं? काव्य - हेतुओं पर भारतीय विद्वानों के मतों का उल्लेख करते हुए काव्य - हेतुओं की समीक्षा कीजिए।

↝ काव्य - हेतु का सीधा - सादा अर्थ ऐसे साधनों एवं तत्वों से है जिनके कारण काव्य - सृजन संभव होता है। कवि भी कवि में परिणत होने के पूर्व एक व्यक्ति होता है, और उसके जीवन की कटु - मधु अनुभूतियाँ प्रतिभा तथा कल्पना का संस्पर्श पाकर महान काव्य - कृतियाँ बन जाती हैं। यही प्रतिभा और कल्पना काव्य - हेतु कहे जाएँगे। इस स्थिति को और अधिक स्पष्ट करते हुए एक विद्वान आलोचक का कथन है — "सामान्य मानव भी विचारशील और संवेदनशील होता है, किन्तु वह अपने अनुभवों को छंदोबद्ध करके किसी निपुण कवि की तरह काव्य - सर्जन नहीं कर सकता। इसका कारण यही है कि प्रत्येक व्यक्ति में काव्य - रचना के हेतुओं का उतना विकास नहीं हो पाता है जितना कवि - कर्म के लिए अपेक्षित है। जो कवि काव्य - रचना के हेतु कहे जाने वाले साधनों में जितना अधिक संपन्न होता है, उसकी कविता उतनी ही अधिक समर्थ होती है।"

प्राचीन काव्य - शास्त्रियों ने अपने - अपने विवेकानुसार काव्य - हेतुओं का वर्णन किया है। इस दृष्टि से दंडी, वामन, रुद्रट, कुंतक और मम्मट आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इन विद्वानों के विचारानुसार

PAGE NO.:
DATE: / /200

तीन काव्य - हेतु माने गए हैं —
(i) शक्ति (ii) व्युत्पत्ति और (iii) अभ्यास ।

(i) शक्ति :→

काव्य - सृजन के प्रसंग में सभी काव्य - शास्त्रियों ने शक्ति अर्थात् कवि - प्रतिभा को सर्वोपरि स्थान दिया है । प्रतिभा ही वह तत्त्व है जो एक कवि और एक साधारण व्यक्ति के बीच विभाजन - रेखा के रूप में समझा जा सकता है । रुद्रट के अनुसार- जिसके बल पर कवि अपने एकांत मन में विस्फुरित होने वाले काव्य - विषयों को अनुकूल शब्दों में सहज ही व्यक्त कर देता है - उसे शक्ति अर्थात् प्रतिभा कहते हैं । प्रतिभाएँ दो प्रकार की होती हैं — जन्मजात तथा शास्त्र ज्ञान और अभ्यास आदि के बल पर विकसित । इन दोनों प्रतिभाओं में विद्वानों ने जन्मजात प्रतिभा को श्रेष्ठ माना है ।

तीनों काव्य - हेतुओं में प्रतिभा या शक्ति को उत्कृष्ट माना गया है । यहाँ दो बातें स्पष्ट हैं — एक तो यह कि काव्य - सृजन के लिए कवि - प्रतिभा अनिवार्य है और दूसरी कि यह अन्य दो काव्य - हेतुओं की अपेक्षा अधिक महत्त्वपूर्ण है ।

(ii) व्युत्पत्ति :→

'व्युत्पत्ति' शब्द का शाब्दिक अर्थ है - प्रगाढ़ पांडित्य अर्थात् छंद, व्याकरण, कला, लोक - स्थिति तथा पदार्थों

Teacher's Signature

के ज्ञान से प्राप्त विवेक - शक्ति को व्युत्पत्ति कहेंगे। एक काव्य - हेतु के रूप में इसकी सार्थकता और उपादेयता असंदिग्ध है। केवल भावुक अथवा प्रतिभावान होने से ही काव्य का सृजन नहीं हो जाता, इसके लिए श्रुति, स्मृति, पुराण, लोक - व्यवहार का ज्ञान होना भी उतना ही आवश्यक है। इसका मुख्य कारण यह है कि काव्य का क्षेत्र अपरिमित होता है। कवि के इतने विस्तृत और अपार संसार से कुछ भी अछूता नहीं होता, अतः काव्य - सृजन के लिए लौकिक और शास्त्रीय ज्ञान समान रूप से आवश्यक है। कवि - प्रतिभा जन्मजात हो सकती है, किन्तु उसका समुचित विकास न होने पर काव्य - सृजन संभव नहीं होता और उसके विकास का एकमात्र आधार है - व्युत्पत्ति।

(iii) अभ्यास :→

तीसरा काव्य - हेतु अभ्यास होता है। प्रस्तुत प्रसंग में अभ्यास का आशय काव्य - निर्माण, चिंतन, मनन और पठन आदि से है। काव्य - सृजन में कुशलता प्राप्त करने का महत्त्वपूर्ण साधन है - अभ्यास। निरंतर अभ्यास से कवि की अभिव्यंजना में तथा भावाभिव्यक्ति में और अधिक प्रांजलता, माधुर्य और प्रभावशालिता का उदय होता है। इसी अभ्यास के कारण महाकवि तुलसी 'श्रीरामचरित मानस' का और महाकवि जयशंकर प्रसाद 'कामायनी' सरीखे उत्कृष्ट महाकाव्य का

सृजन कर पाए।

उपर्युक्त विवेचन से काव्य-हेतुओं के संबंध में तीन महत्त्वपूर्ण दृष्टिकोण सामने आते हैं—

(i) प्रतिभा अनिवार्य है।

(ii) व्युत्पत्ति और अभ्यास कविता के हेतु हैं, और प्रतिभा काव्य का अनिवार्य हेतु है।

(iii) प्रतिभा काव्य का हेतु है और व्युत्पत्ति तथा अभ्यास प्रतिभा के हेतु हैं।

काव्य-हेतुओं संबंधी उपर्युक्त दृष्टिकोण का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि काव्य-सृजन के लिए प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास तीनों आवश्यक हैं। उपर्युक्त काव्य-हेतुओं में कोई भी अकेला काव्य-हेतु काव्य-सृजन का कारण नहीं बन सकता। जब तक दो अन्य काव्य-हेतुओं का समावेश न हो तबतक कोई भी काव्य-हेतु काव्य-रचना के लिए समर्थ नहीं हो सकता। यदि किसी कवि को ईश्वरीय वरदान के रूप में प्रतिभा प्राप्त हुई है तो उस कवि-प्रतिभा के सम्यक् विकास के लिए व्युत्पत्ति और अभ्यास आदि काव्य-हेतुओं की अपेक्षा रहती है। अर्थात् तीनों काव्य-हेतु एक-दूसरे के पूरक होते हैं। यदि तीनों काव्य-हेतुओं के स्थान-निर्धारण का प्रश्न उपस्थित होता है तो कहा जा सकता है कि काव्य-सृजन के बीजरूप में कवि-प्रतिभा होती है और व्युत्पत्ति तथा अभ्यास की स्थिति मिट्टी और पानी की-सी

होती है, जिनके अभाव में लता रूपी काव्य का रूप विकसित नहीं हो सकता। अतः तीनों काव्य-हेतु अपने सम्मिलित रूप में कवि-कर्म के हेतु हैं।